

पूरी तरह से सन्तुलित जीवन

(अध्याय 13)

कल्पना करें कि इब्रानियों की पत्नी के लेखन ने अपना प्रवचन लगभग खत्म कर लिया है। उसने डॉक्ट्रिन की वे अधिकतर बातें बता दी थीं जो वह बताना चाहता था और उसने अपने पाठकों को विश्वास से फिरने के विरुद्ध चेतावनी दी। अन्त में उसने अपने आपसे पूछा होगा, “मैं कैसे समाप्त करूं?” उसने निर्णय लिया, “मैं कुछ व्यावहारिक सुझाव दूंगा जो इन भाइयों को मसीह के लिए प्रतिदिन जीने में सहायक हों।” नये नियम के अन्य कई पत्रों की तरह, व्यावहारिक शिक्षा के साथ पत्र का समापन होता है। इन ताड़नाओं में मसीही जीवन कि जितनी बातें हैं कि हम उन्हें एक सन्तुलित आत्मिक जीवन जीने के ढंग के लिए सुझाव मान सकते हैं।

हम एक सन्तुलित जीवन जीने की आवश्यकता को समझ सकते हैं। उदाहरण के लिए हम जानते हैं कि काम करना अच्छा है। परन्तु हमने “काम के नशे” को भी देखा है जिसमें कुछ लोग अपने काम के नशे में होते हैं, जो सप्ताह में सात या सत्तर या अस्सी घण्टे काम करते हैं और दूसरे किसी बात की परवाह नहीं करते। अन्य शॉक या खेलों या शारीरिक फिटनेस में अधिक दिलचस्पी लेते हैं। इन सभी लोगों को सन्तुलित जीवन जीने उदाहरण के लिए अपने परिवारों के साथ अधिक समय बताने के लिए प्रोत्साहित किए जाने की आवश्यकता है।

हमें भी सन्तुलित आत्मिक जीवन जीने के लिए प्रोत्साहन की आवश्यकता होगी। मसीही व्यक्ति मसीहियत के एक या दो नियमों पर ध्यान लगाते हुए दूसरी बातों की अनदेखी कर सकता है। कलीसिया के कुछ लोग सच्चाई को बढ़ावा देने और झूठ के विरुद्ध बोलने को उत्सुक रहते हैं, परन्तु वे प्रेम और अनुग्रह को नजरअन्दाज कर सकते हैं। कुछ भाइयों को शुद्धता की बड़ी चिन्ता रहती है और वे अनैतिक व्यावहारों के विरुद्ध चेतावनी देते रहते हैं जबकि अन्यो को मसीही जीवन में मुख्य दिलचस्पी रहती है। कुछ भाई आराधना के विषय पर जोश में रहते हैं जबकि अन्य अपना ध्यान परोपकार और दूसरों के साथ भलाई करने पर लगाते हैं। कुछ लोग केवल सुसमाचार प्रचार या मिशन कार्य में लगे रहना चाह सकते हैं।

कलीसिया की सभी चिन्ताएं सही हैं और उन पर जोर दिया जाना चाहिए। एक व्यक्ति के गुणों से उसे किसी दूसरे की अपेक्षा किसी में अधिक दिलचस्पी हो सकती है, पर सन्तुलित मसीही जीवन में गुण और भले काम बहुत से हैं। हमें सन्तुलित आत्मिक जीवन जीना आवश्यक है और इब्रानियों 13 ध्याय हमें बताता है कि हम ऐसा कैसे कर सकते हैं।

प्रेम का जीवन

पहले तो सन्तुलित जीवन प्रेम का जीवन है, विशेषक भाइयों के लिए प्रेम। (पढ़ें इब्रानियों 13:1-3.) अध्याय 13 का आरम्भ एक सामान्य कथन से होता है: “भाईचारे की प्रीति बनी

रहे।” इन मसीही लोगों के सामने अनिश्चित भविष्य होने के कारण, सताव और विश्वास से फिरने दोनों बातों के खतरे में, उन्हें एक-दूसरे से प्रेम रखना जारी रखना आवश्यक है! भाईचारे की प्रीति उनमें पहले से थी; उन्हें इसे रखना आवश्यक था, शायद अपने जीवनों में और भी दिखाना आवश्यक है। हमें एक-दूसरे के लिए अपने प्रेम की रखवाली करनी आवश्यक है। हमें यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि ऐसा होता रहे और एक-दूसरे के साथ हमारे व्यवहार में इसे दिखाया जाए।

फिर, भाईचारे की प्रीति के दो विशेष प्रदर्शन दिए गए हैं:

(1) “अतिथि सत्कार करना न बुलाना।” पहली सदी के लोग घूमते थे, उनके पास दूसरे मसीही लोगों के घरों में ठहरने के अलावा कोई और स्थान नहीं होता था। सम्भवतया यहां “अतिथि सत्कार” घूमने वाले पवित्र लोगों का अतिथि सत्कार करने से सम्बन्धित है।

(2) “कैदियों की सुधि लो।” फिर यह ताड़ना सम्भवतया सामान्य अर्थ में कैदियों की देखभाल करने के लिए नहीं होगी,¹ बल्कि उन मसीही लोगों की देखभाल के लिए होगी जिन्हें अपने विश्वास के कारण कैद में डाला गया था।

हमें अतिथि सत्कार करने के द्वारा और परेशानी में पड़े लोगों की देखभाल करने के द्वारा भाइयों के लिए अपने प्रेम को दिखाना आवश्यक है। *मसीही जीवन प्रेम करने वाला जीवन ही है।*

नैतिक जीवन

दूसरा, सन्तुलित जीवन नैतिक जीवन होता है। यहां मिलने वाला उदाहरण विवाह की शपथ से जुड़ा है। इब्रानियों 13:4 कहता है, “विवाह सब में आदर की बात समझी जाए, और विछौना निष्कलंक रहे; क्योंकि परमेश्वर व्यभिचारियों, और परस्त्रीगामियों का न्याय करेगा।” यह वचन सुझाव देता है कि मसीही जीवन की एक विशेष बात यह है कि मसीही विवाह विशेष है!

मसीही विवाह कोई ऐसी बात नहीं है जिसे अपमान की दृष्टि से देखा जाए; बल्कि यह “आदर की बात” होनी चाहिए। विवाह कराने के बजाय कुंवारे रहकर पवित्र रहना नहीं है। आज विवाह के संस्थान को आम तौर पर अपमानित किया जाता है। स्टेट यूनिवर्सिटी में मेरी पत्नी समाज शास्त्र की क्लास में थी जिसमें विवाह और परिवार पर चर्चा हो रही थी। वहां उपस्थिति तीस या इससे कुछ अधिक लोगों में से, केवल वही अकेली थी जिसने विवाह और परिवार पर कोई अच्छी बात कही! संसार जो भी सोचे, मसीही लोगों को विवाह का आदर करते रहना आवश्यक है!

विशेषकर, मसीही विवाह इस बात में अलग है क्योंकि वफ़ादार मसीही लोग “विवाह का बिछौना” कलंकित नहीं करते। वे अनैतिक या व्यभिचार के व्यवहार के दोषी नहीं हैं। क्यों? क्योंकि वे जानते हैं कि परमेश्वर उन लोगों को दण्ड देगा जो शरीर के पाप के दोषी हैं! व्यभिचार एक पाप है जो न केवल परमेश्वर के विरुद्ध है बल्कि पति या पत्नी के विरुद्ध और उस व्यक्ति के विरुद्ध भी है जिसके साथ व्यभिचार किया जाता है! हमें ऐसे पाप से बचना है! मसीही जीवन एक शुद्ध जीवन है!

भरोसे का जीवन

तीसरा, सन्तुलित जीवन भरोसे का जीवन है-विशेषकर, धन के सम्बन्ध में। इब्रानियों 13:5, 6 एक दोहरी आज्ञा देता है। मसीही लोगों के रूप में हमें अपने जीवनो को धन के प्रेम से स्वतन्त्र रखने चाहिए और जो कुछ हमारे पास है उसमें सन्तुष्ट होना चाहिए। यदि मुझे नये नियम की एक आज्ञा बताने की कोशिश करनी हो जिसे आज अधिकतर लोग नज़रअन्दाज़ करते हैं, तो मुझे लगता है कि वह यही होगी! आधुनिक जीवन के विरुद्ध धन से प्रेम करने की प्रवृत्ति को छोड़ने से बढ़ कर कोई बात नहीं है।

धन से प्रेम करने का क्या अर्थ है? धन का होना बुरी बात नहीं है। धन लगभग जीवन के हर क्षेत्र में हर समाज में एक आवश्यकता है। तो फिर धन का मोह क्या है? शायद आयत का दूसरा भाग पहले भाग की व्याख्या करता है। धन से प्रेम का अर्थ असन्तुष्ट होना है; अधिक से अधिक की इच्छा करना! क्या यह हमारे बारे में कहता है? यह आयतें आज्ञा मानने के लिए हमें एक कारण भी देती हैं। हमें धन से प्रेम क्यों नहीं करना चाहिए? क्योंकि परमेश्वर ने हमारी सम्भाल करने की प्रतिज्ञा की है (13:5ख, 6)! यदि हम धन से प्रेम करते हैं, यदि हम असन्तुष्ट हैं, अधिक से अधिक सम्पत्ति या अधिक से अधिक आर्थिक सुरक्षा चाहते हैं, तो क्या यह इस बात का संकेत है कि हमारे अन्दर परमेश्वर में भरोसे की कमी है? *मसीही जीवन भरोसे का जीवन है।*

सच्चाई का जीवन

चौथा, सन्तुलित जीवन सच्चाई का जीवन है, विशेषकर डॉक्ट्रिन के क्षेत्र में। इब्रानियों 13:7-14 की शिक्षा को समझने के लिए हमें यह समझना आवश्यक है कि आरम्भिक पाठ भटक जाने के खतरे में थे। स्पष्टतया उस खतरे का कुछ भाग झूठी शिक्षा के होने में था, क्योंकि पत्र यहां “नाना प्रकार के विचित्र उपदेशों” की बात करता है (13:9)।

ये झूठी शिक्षा देने वाले क्या सिखा रहे थे? स्पष्टतया उनकी डॉक्ट्रिन या शिक्षा में खाने पीने की बातें थीं, क्योंकि आयत 9 में हम पढ़ते हैं कि उनका मन “अनुग्रह से दृढ़ रहना” चाहिए “न कि खाने की वस्तुओं से।” झूठी शिक्षा देने वाले लोग यहूदी धर्म को भी मिला रहे होंगे। आयत 10 कहती है, “हमारी एक ऐसी वेदी है जिस पर से खाने का अधिकार उन लोगों को नहीं, जो तम्बू की सेवा करते हैं।” यह बात उन कुछ लोगों को जवाब होगी जो यहूदी धर्म की शिक्षा और व्यवहार बता रहे थे। तो लगता है कि कुछ लोग यहूदी धर्म को इसके खाने के नियमों के साथ बढ़ावा दे रहे थे और पवित्र लोगों को अपनी झूठी शिक्षा के साथ खतरे में डाल रहे थे।

झूठी शिक्षा से भ्रमित होने की परीक्षा में पाठक कैसे स्थिर रह सकते थे? (1) उन्हें उन लोगों को याद रखना आवश्यक था जिन्होंने उन्हें आरम्भ में सिखाया था (13:7, 8)। शायद यह ताड़ना इस बात का सुझाव भी देती है कि उन्हें उन सिखाने वालों को भी याद रखना आवश्यक था जिन्होंने आरम्भ में बताया था। (2) उन्हें पता होना आवश्यक था कि मसीही व्यक्ति को मज़बूत अनुग्रह करता है, खाना नहीं (13:9)। (3) उन्हें याद रखना आवश्यक था कि मसीह का बलिदान “फाटक के बाहर” (13:12) हुआ था जिसका अर्थ है “यहूदी धर्म से अलग।” इस तथ्य का अर्थ यह था कि उद्धार का मसीहा का दान पर्याप्त होने के लिए यहूदी प्रबन्ध पर निर्भर नहीं था और यहूदी धर्म से जुड़े रहने वालों का मसीह में कोई भाग नहीं था। (4) उन्हें

याद रखना आवश्यक था कि यहां पर उनका कोई “स्थायी नगर” नहीं था (13:14)। यहूदी लोग शायद मसीही लोगों को यह कहकर उनकी खिल्ली उड़ा रहे थे कि “हमारे धर्म के केन्द्र के रूप में हमारे पास यरूशलेम अर्थात् पवित्र नगर है। तुम्हारा नगर कहा है?” मसीही लोग उत्तर दे सकते थे, “हमारे पास एक उत्तम नगर है, जो आने वाला है अर्थात् स्वर्ग में अनन्त नगर।”

यह वचन सन्तुलित जीवन पर कैसे लागू होता है? यह झूठी शिक्षा के विरुद्ध चेतवनी देता है, इसलिए हमें यह निष्कर्ष निकाला होगा कि कोई बिना झूठी शिक्षा की चिन्ता किए आत्मिक जीवन नहीं बिता सकता। किसी ने कहा है कि यदि हम प्रेम करने वाले और परोपकारी और सुसमाचार का प्रचार करने वाले नहीं हैं तो सच्चाई बताने का कोई फायदा नहीं। और यह बात सच है, परन्तु यह भी सच है कि यदि हम सच्चाई नहीं बताते तो प्रेम करने वाले और परोपकारी होना और सुसमाचार के प्रचार करने वाले होना किसी काम का नहीं है! हमें डॉक्ट्रिन पर ध्यान देना आवश्यक है। *मसीही जीवन सच्चाई को समर्पित जीवन है।*

स्तुति का जीवन

पांचवां, *सन्तुलित जीवन परमेश्वर को महिमा देने वाला जीवन है।* इब्रानियों 13:15 पर ध्यान दें: “इसलिए हम उसके द्वारा स्तुति रूपी बलिदान अर्थात् उन होठों का फल जो उसके नाम का अंगीकार करते हैं, परमेश्वर के लिए सर्वदा चढ़ाया करें।” यह आयत मसीहियत में किसी और चीज़ की बात करती है जो यहूदी धर्म में भी पाई जाती है और यह बलिदान है। परन्तु इनमें एक महत्वपूर्ण अन्तर है। यहूदियों द्वारा दिए जाने वाले बलिदान पशुओं के थे जबकि मसीही बलिदान स्तुति का बलिदान है।

मसीही व्यक्ति का स्तुति का बलिदान (क) परमेश्वर को (ख) अपने होठों से (गाने के समय) (ग) निरन्तर होना आवश्यक है। *मसीही जीवन निरन्तर स्तुति करने वाला जीवन है।*

देने वाला जीवन

छठा, सन्तुलित जीवन दूसरों के लिए देने वाला जीवन है। आयत 16 को देखें “पर भलाई करना, और उदारता न भूलो; क्योंकि परमेश्वर ऐसे बलिदानों से प्रसन्न होता है।” यदि हमारे जीवन सचमुच में मसीही हैं तो हम भलाई करते और जो कुछ हमारे पास है उसे दूसरों के साथ बांटते रहेंगे। यह भी ध्यान दें कि भलाई करना और दूसरों को देना परमेश्वर को दिए जाने वाले अतिरिक्त बलिदान हैं। ज़रूरमंदों की सहायता करना परमेश्वर को दिया जाने वाला बलिदान है। *मसीही जीवन देने वाला जीवन है।*

आदर का जीवन

सातवां, सन्तुलित जीवन अपने अगुओं के प्रति आदर वाला जीवन है। आयत 17 कहती है “अपने अगुवों की मानो; और उनके आधीन रहो, ...।” ध्यान दें कि आयत 7 वाले अगुओं का उल्लेख भूतकाल (में है); वे अपना प्रतिफल लेने के लिए स्वर्ग में जा चुके थे। परन्तु आयत 17 वाले इन अगुओं को वर्तमान काल में बताया गया है वे अभी भी प्राणों की रखवाली कर रहे थे (इब्रानियों की पुस्तक लिखे जाने के के बाद) वे कौन थे? अधिक सम्भावना मण्डली के ऐल्डरों

की है। इसलिए यह आयत दो अवधारणाओं की शिक्षा देती है:

(1) *एल्डरों की ज़िम्मेदारी*: उनका काम मण्डली के प्राणों पर “निगरानी रखना” है। वे केवल बॉस या फैसले लेने वाले लोग नहीं थे; उन्हें उन प्राणों की ज़िम्मेदारी दी गई है जो उनकी देखभाल के अधीन हैं। कितनी भयंकर ज़िम्मेदारी है।

(2) *एल्डरों के साथ मण्डली का सम्बन्ध*: सदस्यों को स्थानीय कलीसिया के अगुओं के मानना और उनके “अधीन” रहना चाहिए। अन्य शब्दों में उन्हें एल्डरों के नेतृत्व आनंद से मानना चाहिए। धन्य है वह कलीसिया जिसके एल्डर अपना काम करते हैं और जिसके सदस्य आदर से उनमें चलते हैं।

अधीनता का नियम कलीसिया के भीतर और इसके बाहर दोनों जगह मसीही जीवन में लागू होता है। *मसीही जीवन अधीनता का जीवन है।*

आज्ञाकारिता का जीवन

आठवां, सन्तुलित जीवन आज्ञाकारिता का जीवन है। (पढ़ें इब्रानियों 13:20, 21.) पत्रों का समाप्त (एक संक्षिप्त व्यक्तिगत संदेश के अलावा) एक प्रार्थना के साथ होता है। लेखक ने परमेश्वर से अपने पाठकों को हर अच्छी चीज़ से आशीष देने के लिए कहा ताकि वे “उसकी इच्छा पूरी” कर सकें। वह प्रार्थना हमारे जीवनों की विनती और लक्ष्य होनी चाहिए: परमेश्वर की इच्छा को पूरा करना और वह काम करना “जो उसको भाता है।” *किसी भी बात से बढ़कर, मसीही जीवन परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने और उसे प्रसन्न करने को ध्यान में रखकर जिया जाता है।*

सारांश

आप किसमें आते हैं? क्या आपका जीवन इब्रानियों 13 में बताए गए मसीही जीवन से मेल खाते हुए सन्तुलित जीवन है? ऐसे पाठ का बेहतरीन जवाब देने के लिए उन क्षेत्रों की समीक्षा करना हो सकता है जिनमें हम कमजोर हैं और उनमें सुधार करने का निश्चय करना हो सकता है।

मसीही लोगों के सामने सबसे बड़ा खतरा उदाहरण के लिए प्रेम पर बहुत अधिक और सच्चाई पर बहुत कम ध्यान देना न हो, परन्तु वे संसार में इतना मगन हो सकते हैं कि वे हर मसीही मूल्य की अनदेखी कर दें। इसलिए सन्तुलित जीवन के एक और विचार के साथ समाप्त करते हैं। कुछ लोगों के जीवन सन्तुलन से बाहर हैं क्योंकि उनके जीवनों में परमेश्वर के लिए जगह नहीं है। आप शारीरिक रूप में स्वस्थ, आर्थिक रूप में धनवान, सामाजिक रूप में विकसित और बौद्धिक रूप में विद्वान हो सकते हैं, परन्तु यदि आपके जीवन में मसीह और इब्रानियों 13 में बताए गए मसीह जैसे गुण नहीं हैं, तो आपके जीवन में कुछ कमी है।